SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"हिन्द महासागर की सुरक्षा,चुनौतियाँ एवं तटीय सुरक्षा प्रबन्धनः एक विश्लेषण"

अभय कुमार सिंह,
शोध छात्र,
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, डा0 रामनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ0प्र0)

प्रो0 अभय कुमार सिंह,
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग,
का0सु0 साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या (उ0प्र0)

शोध सारांश:

वर्तमान समय में जलीय क्षेत्रों की सुरक्षा किये बिना स्थलीय क्षेत्रों की सुरक्षा करना मुश्किल है। प्रत्येक राष्ट्र की सभी नीतियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति मानी जाती है। भारतीय सुरक्षा के विषय में भारतीय तटों की महत्वपूर्ण भूमिका है। स्त्रातेजिक व सामरिक दृष्टिकोण से भारत की तटीय सीमा का बड़ा महत्व है। भारत की तटरेखा 7516.6 किमी0 लम्बी है। जो 5,422 किमी0 मुख्य भूमि तथा 2,094 किमी0 द्वीपों से घिरी हुयी है। इस तट रेखा पर कुल 9 राज्य (गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल) तथा 4 केन्द्र शासित प्रदेश (दमन व द्वीव, लक्षद्वपी, पुडुचेरी और अण्डमान व निकोबार) द्वीप समूह अवस्थित हैं। कई वर्षों से देश के तटीय भाग पर विभिन्न सुरक्षा समस्याओं ने जन्म लिया है। जिनमें तटीय स्थलों पर शस्त्रों और विस्फोटक पदार्थों का उतरना, मादक पदार्थों, वस्तुओं की तस्करी, घुसपैठ आदि अपराधिक गतिविधियों के लिए प्रयोग करना तथा समुद्री डकैती आदि समस्याएँ निहित है। भारत की भू–सीमाएं हिन्द महासागर व अरब सागर को स्पर्श करती है। जिसके कारण इन दोनो महासागरों की सभी गतिविधियों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव भारत पर पड़ता है। अतः सामुद्रिक क्षेत्र की सुरक्षा किसी भी तटवर्ती देश के लिए सामरिक व आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होती है।

शब्द कुंजी (Key words) *हिन्द महासागर नौसेना, तटरक्षक बल, सामुद्रिक सुरक्षा, तटीय सुरक्षा।*

प्रस्तावना (Introduction)

जो भी देश हिन्द महासागर पर नियंत्रण करेगा यह एशिया पर वर्चस्व स्थापित करेगा। यह महासागर सात समुद्रों की कुंजी है। 21वीं शताब्दी में विश्व के भाग्य का निर्धारण इसी की सतह पर होगा।

– अल्फ्रेड थेयर महान

हिन्द महासागर विश्व का तीसरा बड़ा महासागर है। यह 10,400 किमी0 लम्बा तथा 9.600 किमी0 चौड़ा है।[1] यह विश्व के 20.3 प्रतिशत समुद्री क्षेत्र में फैला हुआ है। 47 स्वतंत्र राज्य इसके तटों को स्पर्श करते है।[2] पूरब से पश्चिम की दिशा में यह महासागर आस्ट्रेलिया महाद्वीप से लेकर अफ्रीका महाद्वीप तक और उत्तर से दक्षिण में यह केप केमोरीन तट से अटलांटिक महाद्वीप तक विस्तृत है। इसका जलीय क्षेत्र आस्ट्रेलिया, एशिया और अफ्रीका तीनों महाद्वीपों को स्पर्श करता है। स्वेज नहर तथा मलक्का जलडमरूमध्य के बीच से यह क्रमशः प्रशान्त महासागर के तीन महाद्वीपों को स्पर्श करता है। इस विशाल जल क्षेत्र में सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण द्वीप स्थित है। विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से पाँचवा द्वीप मेडागास्कर भी यहाँ पर स्थित है। इसके अतिरिक्त सुमात्रा, श्रीलंका एवं जावा जैसे बड़े द्वीप है।[3]

भारत 7516 किमी0 से भी ज्यादा दूरी तक फैले विशाल तटरेखा के कारण विश्व में 15वां स्थान रखता है। इतना अधिक तटीय क्षेत्र होने के कारण सुरक्षा की जिम्मेदारी भी अधिक है।[4] जिसके सुरक्षा का दायित्व भारतीय नौ सेना और तटरक्षक बल के कन्धों पर है। 1990 के दशक के बाद से भारत सरकार ने नौसेना रणनीति पर ध्यान केन्द्रित किया है। क्योंकि बढ़ती हुई एशियाई अर्थव्यवस्थाओं का बढ़ता हुआ समुदी व्यापार और चुनौतियों ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया है।

वर्तमान में भारतीय नौसेना को तटीय सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक जिम्मेदारी दी गई है। भारत अपने पड़ोसी देशों में शांति और स्थिरता को सुनिश्चित करने तथा सहयोग करने के साथ–साथ अपने स्वयं के हितो को बढ़ावा देने में लगा है। इस पृष्ठभूमि में यह शोध पत्र वर्तमान भारतीय नौसेना व तटरक्षक बल की रणनीति भारत की सामुद्रिक चुनौतियों प्रतिक्रियाओं और तटीय सुरक्षा प्रबन्धन बहुआयामी दृष्टिकोणों को दर्शाने पर केन्द्रित है।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

भारत की सामुद्रिक अवस्थिति –

भारत हिन्द महासागर के केन्द्रीय भाग में अवस्थित है। हिन्द महासागर आस्ट्रेलिया, एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीपों से घिरा हुआ है। यह महासागर यूरोप के राष्ट्रों को पश्चिमी प्रशांत महासागर के राष्ट्रों से विशेष रूप से जोड़ता है। अर्थात यह प्रशांत महासागर को अटलांटिक महासागर से जोड़ता है। हिन्द महासागर का कुल क्षेत्रफल लगभग 7,25,20,000 वर्ग किमी0 पाया जाता है। यह महासागर विश्व के जलक्षेत्र का लगभग 20.7 प्रतिशत है। इसका कुल तटीय सीमा विस्तार लगभग 66526 किमी0 है। भूमध्यसागर से लगभग 35 गुना बड़ा है।[5] इस महासागर का 30 प्रतिशत भाग इसके तटीय राष्ट्रों के अपवर्जित आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone) के अन्तर्गत आता है। व्यापारिक गतिविधियों के लिए प्राचीनकाल से ही यह जल क्षेत्र विशेष रूप से

केन्द्र में रहा है। इस महासागर के क्षेत्र के अन्तर्गत कुल 12 स्थलबद्ध राष्ट्र, 06 द्वीप राष्ट्र तथा 31 तटीय राष्ट्र हैं।[6] विश्व की लगभग 30 प्रतिशत आबादी इन सभी राष्ट्रों में निवास करती है।

Source : https://www.loc.gov/resource/g9180.ct001358/

इन तटीय राष्ट्रों में अत्यधिक भाग में प्राकृतिक गैस कच्चा तेल तथा खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। इसके अधिकतर तटीय राष्ट्र विकासशील है। जिसके कारण में क्षेत्रीय देश इन कच्चे संसाधनों की सीधे उपयोग बड़े पैमाने पर स्वयं नहीं कर पाते हैं। वयोंकि कच्चे संसाधनों के प्रसंस्करण के लिए इसके पास स्वयं की तकनीकि नहीं है। इसलिए यह राष्ट्र इन संसाधनों को विकसित राष्ट्रों को निर्यात करते हैं। भारत भी दक्षिण कोरिया, जापान, चीन इत्यादि देशों को अनेक प्रकार के खनिज संपदा का निर्यात करता है।[7]

भारत के लिए सामुद्रिक चुनौतियाँ –

भारत के समक्ष प्रमुख समुद्री चुनौतियाँ निम्नलिखित है।

संगठित अपराध – समुद्री भागों से मानव तस्करी, मादक पदार्थों, हथियारों तथा संगठित अपराध के रूप में एक प्रमुख सामुद्रिक सुरक्षा चुनौती है। वर्ल्ड ड्रग रिर्पोट 2020 के अनुसार कोविड–19 (वैश्विक महामारी) के समय भी चीन द्वारा नशीले पदार्थों की तस्करी की गयी थी। जब समूचे विश्व में लाकडाउन के कारण स्थलीय एवं वायुमार्ग प्रतिबन्धित कर दिया गया था। लेकिन कुछ देशों द्वारा इस वैश्विक महामारी के समय में भी अपने कुटिल चालों द्वारा मादक पदार्थों तथा मानव तस्करी जैसे अवैध कारोबार को समुद्री मार्गों द्वारा किया गया था।[8]

समुद्री आतंकवाद – समुद्री मार्ग से आतंकवाद का दंश भारत भी झेल चुका है। 26 नवम्बर 2008 का मुम्बई आतंकवादी हमला, भारतीय समुद्री सुरक्षा पर बड़े प्रश्न चिन्ह पहले ही खड़े कर चुका है। उस समय भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा को अत्यंत गम्भीर चुनौती आतंकवादियों द्वारा उत्पन्न किया गया था। इस हमले में पाक–आतंकी

अरब सागर से होते हुए मुम्बई तट पर घुसपैठ किये थे। मुम्बई आतंकवादी धमाका सन् 1993 के समय भी आतंकवादियों द्वारा समुद्री मार्गों का उपयोग हथियारों को लाने के लिए किया था।[9] इस घटना के पश्चात भारत ने अन्य दूसरे उपायों के साथ ही तटीय निगरानी तथा टोही कार्य के लिए कड़े दिशा–निर्देश जारी किया था। इस सब का लाभ यह हुआ कि आतंकी दोबारा किसी बड़ी घटना को अंजाम नहीं दे सके।

स्वतंत्र नौ वहन में बाधा – वर्तमान समय में चीन भारत के पड़ोसी देशों जैसे–बांगलादेश का चटगांव, श्रीलंका का हम्बनटोटा, पाकिस्तान का ग्वादर, मालद्वीव का मराओं, ईरान का चाबहार बन्दरगाहों का निर्माण तेजी से कर रहा है। जिसके कारण भारत के लिए तनाव की स्थिति उत्पन्न कर दी है। इस बन्दरगाहों के निर्माण के द्वारा चीन, भारत के लिए स्वतंत्र नौ वाहन के लिए चुनौती पेश कर सकता है। इस प्रकार चीन द्वारा भारत के चारों ओर बन्दरगाहों का इस प्रकार विकास उसकी स्ट्रिंग आफ पर्ल (जतपदह व िच्मंतसे) नीति को दशार्ता है।[10]

समुद्री डकैती – समुद्री डकैती की घटना प्रायः उच्च समुद्रों में घटित होती है। यह व्यापार को निशाना बना संबंधित राष्ट्र की आर्थिक गतिविधियों, अर्थव्यवस्था तथा यात्रियों के जान को जोखिम में डालती है। ऐतिहासिक दृष्टि से जिब्राल्टर, मलक्का खाड़ी, अदन की खाड़ी और मेडागास्कर आदि समुद्री डकैती के सबसे भेद्य क्षेत्र है।[11] हिन्द महासागरीय जलक्षेत्र की सबसे प्रमुख सुरक्षा चुनौती अपहरण और समुद्री लूट की रही है। क्योंकि इस जलक्षेत्र में व्यापारिक जहाजों का आवागमन का घनत्व बहुत ज्यादा है। जिससे समुद्री डकैती के लिए लाभदायक परिस्थितियों उत्पन्न हो जाती है।

समुद्री प्रदूषण – वर्तमान समय में समुद्री जल प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है। समुद्री प्रदूषण का मुख्य कारण हानिकारक एवं बेकार पदाथों को समुद्र जलक्षेत्र में छोड़ना, नदियों द्वारा अनेक खतरनाक अपशिष्ट पदार्थों का बहकर यहाँ पहुंचना तथा तेल टैंकरों से तेल रिसाव का होना है। भारतीय तटीय जलक्षेत्र से हजारों तेल टैंकर प्रत्येक माह गुजरते हैं। इन तेल टैंकरों में कभी–कभी तेल रिसाव के कारण लाखों बैरल तेल समुद्र में फैल जाता है। जिसके कारण समुद्री प्रदूषण बढ़ता है। इन फैले हुए तेलों के वजह से लाखों टन मरी मछलियों का तट के किनारे ढेर लग जाता है। जिसके कारण जल प्रदूषण के साथ–साथ वायु प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो जाती है। समुद्री जल प्रदूषण से पारिस्थितिकीय तंत्र पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है।[12] वर्ष 2021 में चीन ने रेडियोएक्टिव पदार्थों से लदा एक टैंकर श्रीलंका के हम्बनटोटा बन्दरगाह पर श्रीलंका सरकार को सूचना दिये बिना पहुंच गया था। जब श्रीलंका सरकार को इसका पता चला तो श्रीलंका द्वारा कड़ा विरोध किया गया। इस विरोध को देखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारण चीन ने टैंकर को वहाँ से हटा लिया। अन्यथा यह जानकारी नहीं हुयी होती तो बहुत बड़ा रेडियोएक्टिव हब हो सकता था। जिसके कारण तटीय राष्ट्रों व हिन्दमहासागर के लिए एक विकराल स्थिति उत्पन्न हो सकती थी।[13]

तटीय सुरक्षा प्रबन्धन के लिए किये गये उपाय –

तटीय सुरक्षा विषय पर राष्ट्रीय प्रयासों की चर्चा करें तो वास्तविक रूप से सन् 1993 और सन् 2008 के मुम्बई आतंकवादी हमलों के पश्चात् तटीय सुरक्षा, बन्दरगाहों की सुरक्षा तथा सामुद्रिक हितों की सुरक्षा हेतु अनेक आवश्यक कदम उठाये गये।[14] जिसमें त्रि–स्तरीय निगरानी प्रणाली, तटीय बल और विशेष तटीय सुरक्षा

बलों का गठन किया गया, साथ ही सुरक्षा हेतु अत्याधुनिक नवीन तकनीकि प्रणालियों का समावेश किया गया। व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाये गये। आज कई स्तरों पर तटीय सुरक्षा एवं सुदृढ़ीकरण की दिशा में केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय प्रयास किये जा रहे हैं।

सागर प्रहरी बल – यह भारतीय नौसेना की एक इकाई है। इस बल का गठन सन् 2009 में किया गया है। तटीय सुरक्षा की निगरानी को मजबूत करने के लिए निर्मित बल में 1000 कर्मचारी और 80 गश्ती नौकाएं शामिल हैं। सागर प्रहरी बल के जवान अत्याधुनिक हथियारों से लैस होते हैं। इनकी यह गश्ती नौकाएँ 50 मील प्रतिघण्टा की रफ्तार से समुद्र में शत्रु का पीछा करने से सक्षम है। मुम्बई आतंकवादी हमले को बाद से सागर प्रहरी बल तटरेखा की गश्त लगाने का कार्य नियमित रूप से करता आ रहा है।[15]

मरीन पुलिस फोर्स – भारत की आर्थिक राजधानी के रूप में प्रसिद्ध मुम्बई शहर पर सन् 1983 में हुए आतंकी हमलों के दौरान समुद्री तटों पर शस्त्रों सहित घुसपैठ को रोक पाने की असफलता के पश्चात एक समुद्री पुलिस की आवश्यकता पर बल दिया गया और यह महसूस किया गया कि विशेष समुद्री पुलिस की स्थापना सभी तटीय राज्यों व द्वीप क्षेत्रों में अति आवश्यक रूप से होनी चाहिए।[16] इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए सबसे पहले तमिलनाडु सरकार ने सन् 1994 में तटीय सुरक्षा समूह (ब्वेंजंस ैमबनतपजल ळतवनचए ब्ैळ) का गठन किया। इसका प्रमुख उद्देश्य तमिलनाडु के तट से श्रीलंका तक मादक पदार्थों अवैध हथियारों, ईधन आदि अन्य आवश्यक वस्तुओं की तस्करी तथा महुआरों आतंकवादियों और तस्करों के बीच मिलीभगत की जांच की ध्यान में रखते हुए एल0टी0टी0ई0 आतंकवादियों की समुद्री मार्ग के माध्यम से राज्य में घुसपैठ को रोकना था।[17] इसी प्रकार पश्चिमी तटीय राज्य कर्नाटक ने लगातार तरक्की की बढ़ती घटनाओं और आतंकवादियों द्वारा घुसपैठ की चिन्ताओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1999 में तटीय सुरक्षा पुलिस (ब्वेंजंस ैमबनतपजल च्वसपबमए ब्ैच्) की स्थापना की।

इसके अलावा तटीय सुरक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से मार्कोस कमांडो की तर्ज पर मरीन कमांडो की नयी ब्रिगेड तैयार की गयी है। इन कमाण्डो को जल, थल और नम क्षेत्र में लड़ने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके लिए जवानों को थलसेना में से चयनित किया जाता है। इस ब्रिगेड का मुख्यालय प्छै कर्ण (विशाखापत्तनम) में स्थापित किया गया है।[18] इसके अलावा गुजराज राज्य ने भी अपनी 1600 किमी0 लम्बी तटरेखा की सुरक्षा हेतु 1000 मरीम कमांडो तैनात किया है।

मार्कोस कमाण्डो – यह भारतीय नौसेना की एक विशेष बल इकाई है। जिसे वर्ष 1987 में स्थापित किया गया था।[19] इन्हें आतंकवाद के अलावा नेवी आपरेशन, एण्टी पायरेसी आपरेशन्स में भी इस्तेमाल किया जाता है। इनका मोटो श्जीम थ्मू जीम थ्मंतसमेेष् है।[20] वैसे तो इन्हें पानी से जुड़े आपरेशन्स में महारत हासिल होती है। लेकिन इस बल को किसी भी तरह के आपरेशन्स में उपयोग किया जा सकता है। इनके प्रशिक्षण में इन्हें जांघों तक कीचड़ में घुसकर 800 मीटर की दौड़ लगानी पड़ती है। इस दौरान इनके कन्धों पर 25 किलो का वजन भी रखा जाता है। मार्कोस कमांडो को हर प्रकार के हथियार और उपकरणों जैसे–चाकू, धनुष, स्नाइपर राइफल और हथगोले चलाना, नंगे हाथों से लड़ने में प्रशिक्षित किया जाता है। इन कमाण्डों के घर वालों को भी यह पता नहीं होता है कि वे कमांडो है। इनको अपनी पहचान छिपाकर रखनी होती है। मार्कोस कमाण्डो की

अधिकतर ट्रेनिंग आई0एन0एस0 अभिमन्यु (मुम्बई) में होती है। इनके प्रशिक्षण के लिए अन्य प्रमुख केन्द्र गोवा, कोच्चि विशाखापत्तनम और पोर्ट ब्लेयर में स्थित है।[21]

इसके अलावा तटीय सुरक्षा प्रबंधन हेतु केन्द्र व राज्य सरकार तथा सुरक्षा एजेंसियों द्वारा कुछ अन्य महत्वपूर्ण कदम भी उठाये गये है, जो संक्षेप में निम्नानुसार है।

- जागरूकता अभियान
- बन्दरगाहों की सुरक्षा
- नौकाओं का पंजीकरण
- सेतु समुद्रम प्रोजेक्ट
- मछुआरा पहचान पत्र
- पाईरेसी बिल, 2012
- संयुक्त प्रचालन केन्द्र

मुम्बई के 26 नवम्बर 2008 (26/11) के आतंकी हमले के बाद देश के समस्त तटीय सुरक्षा परिदृश्य पर सरकार द्वारा अनेक स्तरों पर समीक्षा की गयी। तटीय सीमा को आटोमेटिक आइडेंटिफिकेशन सिस्टम (A.I.S.) व रेडार सिस्टम द्वारा अभेद बनाया जा सकता है, अतः इनके लिए जहाजरानी, सड़क व राजमार्ग मंत्रालय द्वारा तटरक्षक बल के सहयोग से तटीय निगरानी नेटवर्क तैयार किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत स्टेटिक रेडार, इलेक्ट्रो आप्टिक सेन्टर, आटोमेटिक आइडेटिफिकेशन सिस्टम पर नजर रखने के लिए सभी तटीय और द्वीपीय क्षेत्रों में लगाये जा रहे हैं। भारतीय नौसेना के तटरक्षक बल के मदद से नेशनल कमाण्ड, कंट्रोल, कम्यूनिकेशन और इंटेलिजेंस नेटवर्क (NC31) को बीईएल द्वारा प्रारम्भ किया गया है।[22] इसमें तटरक्षक के साथ–साथ तटीय सुरक्षा सूचनाओं के उचित प्रबन्धन हेतु मछुआरों को भी शामिल किया गया है, जो सुरक्षा एजेंसियों के लिए 'आँख और कान की भूमिका निभाते हैं। तटीय सुरक्षा हेतु राष्ट्रीय प्रयासों की बात करें तो वास्तविक रूप से सन् 1993 और सन् 2008 के आतंकी हमलों के पश्चात तटीय सुरक्षा, पोर्ट की सुरक्षा व सामुद्रिक हितों की सुरक्षा हेतु आवश्यक कदम उठाये गये।[23] जिनमें त्रिस्तरीय निगरानी प्रणाली, तटीय बल व विशेष तटीय सुरक्षा बलों का गठन किया गया साथ ही सुरक्षा हेतु अत्याधुनिक नवीन तकनीकि प्रणालियों का समावेश किया गया, व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाये गये तथा तटवर्ती क्षेत्रों मे एकल, संयुक्त और बहुस्तरीय नौसैनिक अभ्यासों का संचालन आदि शामिल है। जिनमें डीजीए एक्सरसाइज (Defence of Gujrat Exercies), ट्रापेक्स (Theatre Level Operational Readiness Exercise), थीरा वेटा एक्सरसाइज (Thera Veta Exercise), आपरेशन आइलैंड वाच (Operation Island watch) प्रमुख है। भारतीय पूर्वी तथा पश्चिमी तटों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व तीन स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था को सौंपा गया है।[24] जिसके तहत संयुक्त रूप से भारतीय नौसेना की जिम्मेदारी 200 समुद्री मील तक है।[25] तटरक्षक बल को मध्यवर्ती पर समुद्री क्षेत्र के 12 समुद्री मील से 200

समुद्री मील तक की सीमा तक और समुद्री पुलिस को सबसे भीतरी उथले तट और अन्तर्देशीय समुद्र स्तरीय सुरक्षा का कार्य दिया गया है। जिसका क्षेत्र तट से 12 समुद्री मील तक है।[26]

Source : https://images.app.goo.gl/xM4HB3N4GNHZEMu28

इसके अलावा तटीय क्षेत्रों में निवास करने वाली जनसंख्या के लिए राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (N.P.R.) सहित लोगों को राष्ट्रीय पहचान पत्र दिये जा रहे हैं।[27] तटीय सुरक्षा हेतु नेटवर्किंग और प्रबन्धन के अन्तर्गत राष्ट्रीय कमाण्ड, कन्ट्रोल, कम्यूनिकेशन व इंटेलिजेंस नटवर्क (NC3I), तटीय सुरक्षा नेटवर्क (CSN), नेशनल ऑटोमैटिक आइडेंटीफिकेशन सिस्टम (NAIS), पोट यातायात प्रबन्धन प्रणाली (VTMS)[28], इण्डियन मैटीटाइम सर्च एण्ड रेस्क्यू (INDSAR), भारतीय पोत स्थिति और सूचना रिपोर्टिंग प्रणाली (INSPIRES), आइलैण्ड रिपोर्टिंग व प्री–आरइवल सिक्योरिटी सिस्टम, स्वचालि पहचान प्रणाली (AIS), लांग रैंज आइडेंटीफिकेशन ट्रेकिंग सिस्टम (LRIT)[29], संकट चेतावनी प्रणाली (क.।ज), जहाज सुरक्षा चेतावनी प्रणाली (SSAS), जीपीएस (Global Positioning System), आधारित सीमा चेतावनी प्रणाली (Border Alert System)[30], जैसी अत्याधुनिक प्रणालियों का उपयोग किया जा रहा है।

निष्कर्ष– वर्तमान समय में भारतीय तट कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जैसे–समुद्री डकैती, घुसपैठ, अवैध शस्त्र व्यापार आदि प्रत्यक्ष रूप से सुरक्षा को चुनौतियाँ देते हैं तथा मादक पदार्थ मानव तस्करी जैसे विषय अप्रत्यक्ष रूप से कमजोर कर रही है। ज्ञात हो कि कभी–कभी ऐसे गम्भीर पहलू हमारे जीवन पर बिना युद्ध के ऐसा प्रभाव डालते हैं। जिनका असर हमें कई वर्षों तक सहना पड़ता है। उल्लेखनीय है कि तस्करी से अर्जित आय हमारे ही धन का प्रयोग हमारे ही विरूद्ध अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। भारतीय सामुद्रिक क्षेत्रों के आस–पास समुद्री डकैत व सोमालियाई डाकुओं की भी गतिविधियाँ रहती हैं। ऐसे में संभावना है कि यदि

इन डकैतों को पूर्णतया अत्याधुनिक हथियार प्राप्त हो जाये या इनका किसी आतंकी संगठन से सम्बन्ध हो गया तो सम्पूर्ण भारतीय सामुद्रिक क्षेत्रों व द्वीप क्षेत्रों के लिए संकट पैदा कर सकते हैं और भारतीय तटीय राज्यों में मुम्बई जैसी आतंकी घटना की पुनरावृत्ति हो सकती है।

ऐसे में भारत जैसे तटवर्ती देशों के लिए अतिआवश्यक हो जाता है कि तटीय क्षेत्रों की शांति व सुरक्षा के लिए समय रहते ही उचित प्रयास किये जाये। भारत के लिए सामुद्रिक शक्ति का विकास केवल समुद्री डाकुओं के संभावित गतिविधियों की आशंका से ही नहीं बल्कि अरब सागर व हिन्द महासागर में अन्य राष्ट्रों की सैनिक गतिविधियों को ध्यान में रखना आवश्यक है। आज भारतीय तटों के आस–पास पाकिस्तान, चीन, अमेरिका, फ्रांस आदि राष्ट्रों की सैनिक गतिविधियां देखने को मिल रही हैं जो भारत के लिए भविष्य में खतरा उत्पन्न कर सकती हैं। अतः भारत को हिन्द महासागर, अरब सागर व अपने तटवर्ती राज्यों की सुरक्षा के लिए तटों पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये जाने चाहिए, साथ ही अपनी नौसैनिक व तटीय सुरक्षा बलों की क्षमताओं में भी विस्तार करना होगा। भारत जैसे समृद्धशाली देश को स्वयं अपनी सम्प्रभुता बनाये रखने तथा भविष्य में तटीय सुरक्षा तंत्र की चुनौतियों का जवाब देने के लिए सदैव सजग रहना होगा।

सन्दर्भ :–

1. शरण हरि, सिन्हा हर्ष कुमार; ''हिन्द महासागर चुनौतियां एवं विकल्प'', प्रत्युष पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2018, पृ0 18
2. पाण्डेय रामसुरत; राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 2022, पृ0 196
3. कासिम एस0जेड; जानिए हिन्दमहासागर को, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ0 13
4- https://eprints.cmfri.org.in/14325/1/Marinc%20Fish%Landings%20in%20India_2020_CMFRI.pdf.
5. शरण हरि, सिन्हा हर्ष कुमार; ''हिन्द महासागर चुनौतियां एवं विकल्प'', प्रत्युष पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2018, पृ0 18
6. वही, पृ0 20
7. पाण्डेय रामसुरत; राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 2022, पृ0 194, 196
8. द हिन्दू, नई दिल्ली, वर्ल्ड ड्रग रिपोर्ट, 2020
9. शरण हरि, सिन्हा हर्ष कुमार; ''हिन्द महासागर चुनौतियां एवं विकल्प'', प्रत्युष पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2018, पृ0 167
10- https://thediplomat.com/2014/02the-maritime-silk-road-vs-the-string-of-pearls/

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

11- https://en.wikipedia.org/wiki/paracy_in_the_21st_century

12- https://www.researchgate.net/publiecation/345674343_MARINE_POLLUTIONI_SOURCES_EFFECT_AND.....

13- https://navbharttimes.indiatime.com/world/ asian-countries/china-docked-nuclear-redioactive-material-ship-at-hambantota-poart-without-permission-of-sri-lanka-govt/articleshow/ 82213287.cms

14- https://economicstimes.indiatimes.com/news/defence/pakistan-basedterror-groups-taining-cadre-for-samundari-jihad-government/articleshow/67347936.cms?from= mdr

15- https://economictimes.indiatimes.com/topic/sagar-prahari-bal

16- https://maritimeindia.org/marine-policing-and- maritime-security-in-India-evolving-dimensions/

17- https://documents-dds ny.un.org/doc/UNDOC/ GEN/NO8/266/26/PDF/NO826626.PDF?Open element

18- https://indiancc.mygov.in/activity/anubhav- maharana/marcos-commando/

19- ibid

20- https://www.thedefencearchive.com/post/macros

21- https://navbharattimes.idiatimes.com/education/job-juction/india-navy-marcos-commando-job-t...

22- Dinkar Peri, "IMAC will help navy step up soastal surveillance"

23- Das,Himadri; Coastal Dimensions of Maritime Security, National Maritime foundation, New Delhi, 2022, p. 260

24- ibid, P. 228

25- ibid, P. 207

26. शरण हरि, सिन्हा हर्ष कुमार; ''हिन्द महासागर चुनौतियां एवं विकल्प'', प्रत्युष पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2018, पृ0 170

27- Mahajan Hemant, YSM, India's Coasta Security, Challenges, Concerns & Way Ahead, Maritime Research Centre, Indian Maritime Foundation, Pune, 2017, P. 19

28- https://www/newindianexpress.com/states/tamil-nadu/2020/feb/16/govt-to-fit-transponders-on-sk-fishing-vessels-2104026.html.

29- https://www.imo.org/en/Our Work/Safety/ Pages/LRIT.aspx

30- https://www.researchgate.net/publication/319345274_Automatic_Border_Alert_Sytem_for_ Fisherm....

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/19

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अभय कुमार सिंह एवं प्रो0 अभय कुमार सिंह

For publication of research paper title

"हिन्द महासागर की सुरक्षा,चुनौतियाँ एवं तटीय सुरक्षा प्रबन्धनः एक विश्लेषण"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com